# हापुड़ तहसील के मुख्य मंदिरों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण

डॉ० आंचल

सहायक आचार्य

इतिहास विभाग

कमला आर्य कन्या पी जी कॉलेज,मिर्जापुर

**सारांश –** भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का सबसे छोटा जनपद हापुड़ है। इसी हापुड़ जिले की तीन तहसीलों में से एक हापुड़ तहसील में स्थित ऐतिहासिक मंदिरों का वर्णन इस शोध पत्र में किया गया है। भारत में निर्मित मंदिर भारतीय धर्म व संस्कृति के प्रतीक रहे हैं। समय के साथ–साथ उनकी वास्तुकला में भी परिवर्तन होता रहा तथा स्थानीय आधार पर भी मंदिर की कला में परिवर्तन होता रहा है। स्थानीय आधार पर हम मंदिर की वास्तुकला को तीन भागों में विभाजित करते हैं जैसे – नागर, द्रविड़ तथा बेसर। प्रस्तुत शोध पत्र में हापुड़ तहसील के ऐतिहासिक मुख्य मंदिरों के विषय में बताएंगे जिनका निर्माण उत्तर भारत की प्रसिद्ध नगर शैली में हुआ है।

**प्रस्तावना –** भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहां पर ईश्वर की आराधना के निमित्त अनेक मंदिरों का निर्माण समय–समय पर हुआ है। इन मंदिरों के निर्माण संबंधी विभिन्न उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रंथो में मिलते हैं जिससे ज्ञात होता है कि प्रारंभ में मंदिर या देवायतन सीधे–साधे रूप में बनाए जाते थे। आगे चलकर कलात्मक अभिवृद्धि के साथ–साथ मंदिर निर्माण का स्वरूप भी परिवर्तित होता चला गया तथा एक से बढ़कर एक भव्य मंदिरों का निर्माण होने लगा। प्राचीन काल में निर्मित यें मंदिर आज भी भारत में मौजूद हैं जो कि भारत की धर्म व संस्कृति का प्रतीक है। गुप्त काल से लेकर मुगल काल तक भारत के विभिन्न भागों में विविध देवी – देवताओं से संबंधित मंदिरों का निर्माण हुआ। समय तथा स्थान के आधार पर इन मंदिरों की शैलियों में भेद – प्रभेद होने स्वाभाविक थे।

**बीज वाक्य –** गर्भग्रह, नागर शैली, मंदिर, आमलक, हापुड़, शिखर, मंडप सांस्कृतिक, असरा, झारखंडी, अनुष्ठान, प्रतिमा।

## हापुड़ जनपद की भौगोलिक स्थिति एवं ऐतिहासिकता

हापुड़, भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक जनपद है जो की राजधानी नई दिल्ली से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हापुड़ जनपद के उत्तर में मेरठ,दक्षिण में बुलंदशहर, पूर्व में अमरोहा तथा पश्चिम में गाजियाबाद जनपद स्थित है। हापुड़ जनपद में तीन तहसीलें गढ़मुक्तेश्वर, हापुड़ तथा धौलाना है। जनपद की कुल जनसंख्या लगभग 13,38, 310 है तथा कुल गांव 352 व 273 ग्राम पंचायत है। ऐतिहासिकता की बात करें तो हापुड़ नगर की स्थापना बरन (बुलंदशहर) के राजा हरदत्त ने 983 ई० में की थी जो उस समय मेरठ व बुलंदशहर के डोरों का प्रमुख था। यहां पीपल व बरगद के घने जंगल को हापड कहते थे जिसके कारण इस नगर का नाम हापुड़ पड़ा।

28 सितंबर 2011 तक हापुड़ गाजियाबाद जनपद का हिस्सा रहा। तत्कालीन मुख्यमंत्री मायावती द्वारा 28 सितंबर 2011 को पंचशील नगर नाम से हापुड़ नगर को जिले के रूप में घोषित किया गया।

जुलाई 2012 में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने इसका नाम बदलकर ''हापुड़ रख'' दिया।

**हापुड़ तहसील के मुख्य ऐतिहासिक मंदिर**

1.**श्री चंडी देवी मंदिर –** यह मंदिर हापुड़ शहर के पक्का बाग चौराहा स्थित चंडी रोड पर स्थित है। हापुड़ रेलवे स्टेशन से मंदिर की दूरी लगभग 1.8 किलोमीटर है। मंदिर के पुजारी बताते हैं कि यह मंदिर बहुत ही प्राचीन है किंतु इसका समय किसी को भी ज्ञात नहीं है। फिर भी एक अनुमान के अनुसार मंदिर को 350 से 400 वर्ष प्राचीन बताया जाता है।

स्थानीयवासियों के अनुसार हरनारायण कायस्थ नाम के व्यक्ति अपने खेत में जुताई कर रहे थे और जुताई करते वक्त खेत में से देवी की प्रतिमा निकली थी तब हरनारायण कायस्थ ने देवी प्रतिमा के चारों तरफ एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया और अपनी भूमि मंदिर के लिए दे दी। हरनारायण कायस्थ जी के नाम का एक लेख मंदिर में आज भी लगा हुआ है।

समय के साथ–साथ मंदिर में निर्माण का कार्य भी चलता रहा तथा आज यह मंदिर बहुत ही भव्य एवं आकर्षक बना हुआ है। कहते हैं कि अपने कार्य की सिद्धि के लिए माता को यहां मीठा पान चढ़ाया जाता है। मंदिर में स्थित देवी की प्रतिमा में सिर्फ देवी का मुख ही दिखाई देता है।

मंदिर की शैली की बात करें तो यह मंदिर पूर्णतया नागर शैली में बना हुआ है। जिसमें शिखर को चतुष्कोणीय बनाया गया है। इस शिखर की लंबाई ज्यादा नहीं है। शिखर के ऊपर आमलक को स्थापित किया गया है तथा आमलक के ऊपर पीतल का कलश स्थित है। जिस पर ध्वज को लहराया गया है। इस मंदिर की दीवारें बहुत ही मोटी – मोटी है तथा मंदिर का प्रवेशद्वार बहुत ही बड़ा व भव्य बनाया गया है।संपूर्ण मंदिर का निर्माण सफेद संगमरमर से किया गया है। मंदिर की देखभाल के लिए एक कमेटी बनी हुई है जो की मंदिर की व्यवस्था व रखरखाव का कार्य करती है।

**2 .श्री श्यामेश्वर महादेव मंदिर –** यह मंदिर हापुड़ तहसील के छपकौली ग्राम में स्थित है। इस मंदिर के समीप से होकर काली नदी बहती है। मंदिर के पुजारी बताते हैं कि इस मंदिर का शिवलिंग स्वयंभू है। जिसका किसी को पता नहीं है कि कब यह शिवलिंग धरती के गर्भ से निकला था। मंदिर के विषय में कहा जाता है कि राजा हरिश्चंद्र स्वयं यहां पूजा करते थे एवं उन्होंने ही यहां पर एक छोटे से गर्भग्रह का निर्माण कराया था।

वर्तमान में मंदिर का संपूर्ण क्षेत्रफल लगभग 24 से 25 बीघा भूमि पर स्थित है। जिसमें मंदिर के साथ–साथ गौशाला, बगीचा, धर्मशाला आदि बनी हुई है।

मंदिर के इतिहास के बारे में बताया जाता है कि जगतगुरु शंकराचार्य दिव्यानंद जी ने यहां आकर सिद्धि ली थी। उनकी एक कुटी भी मंदिर में स्थित है। साथ ही इनके द्वारा बनवाया गया अस्पताल आज भी मंदिर में मौजूद है।

मंदिर के गर्भग्रह में जाने के लिए तीन सीढ़ियां नीचे की ओर बनी हुई है। गर्भगृह प्रवेश द्वार के दोनों तरफ दो प्रतिमाएं हैं जिसमें दाएं तरफ भैरव बाबा एवं बाई तरफ काली मां की प्रतिमा स्थापित है। गर्भग्रह में प्राचीन शिवलिंग स्थापित किया गया है जो की गेरुआ रंग का है।शिवलिंग के चारों तरफ काले रंग का अष्टकोणीय पत्थर लगा दिया गया है। गर्भग्रह के बाहर सभामंडप है जहां भक्तजन बैठकर ध्यान लगाते हैं।

मंदिर के चारों ओर प्रदक्षिणापथ बना हुआ है जिस पर 12 ज्योतिर्लिंग स्थापित किए गए हैं। मंदिर में कुल 10 धर्मशालाएं बनी हुई है। यह मंदिर आसपास के गांवों की आस्था का भी केंद्र है। साथ ही दिल्ली,राजस्थान, हरियाणा आदि के भक्त यहां दूर–दूर से दर्शन करने के लिए आते हैं।

**3. चंडी मंदिर** – यह मंदिर बुलंदशहर रोड पर स्थित चितौली गांव में पड़ता है। गांव तक पहुंचने के लिए बुलंदशहर रोड से करीब 5 किलोमीटर अंदर चलना होता है। मंदिर के पुजारी जी का कहना है कि यहां माता की प्रतिमा स्वयंभू है तथा जो चंडी मंदिर हापुड़ के पक्का बाग चौराहा पर पड़ता है उसकी ज्योति इसी मंदिर से गई हुई है। कहते हैं कि इस स्थान पर एक टीला हुआ करता था जो की पलट गया इसीलिए इसे अभी भी उल्टा खेड़ा कहा जाता है।

इस मंदिर का गर्भग्रह बिल्कुल सादा है। जिसमें चंडी देवी के मुख की प्रतिमा स्थापित है। देवी प्रतिमा के ऊपर छत्र को स्थापित किया गया है। गर्भग्रह के प्रवेश द्वार पर दोनों तरफ दों बैठे हुए सिंह की प्रतिमाएं स्थापित की गई है तथा गर्भग्रह के बाहर एक बड़ा सभामंडप या बरामदा बना हुआ है। इस मंदिर का शिखर चतुष्कोणीय न होकर एक प्याजाकार गुंबद की तरह बनाया गया है तथा उसके ऊपर एक छतरी बनाई गई है जिस पर पीतल का कलश एवं कलश के ऊपर त्रिशूल को स्थापित किया गया है। वर्तमान में मंदिर प्रांगण में चंडी मंदिर के अलावा शिव मंदिर तथा दुर्गा मंदिर भी बना दिए गए हैं।

इस मंदिर की मान्यता बहुत ही प्राचीन है तथा ऐसा माना जाता है कि व्यक्ति की हर मनोकामना यहां पूर्ण होती है।

**4. प्राचीन शिव मंदिर** – यह मंदिर हापुड़ तहसील के नानगांव में स्थित है। नानगांव, चितौली गांव से लगभग 8 किलोमीटर आगे चलकर पड़ता है। यह मंदिर गांव के पीछे की तरफ खेतों में बना हुआ है। गांव के निवासियों के अनुसार इस मंदिर का शिवलिंग बहुत ही प्राचीन तथा स्वयंभू है तथा लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले एक महिला द्वारा घास काटते वक्त यह शिवलिंग प्रकाश में आया। इसी समय गांव के एक निवासी बुद्धा यादव ने शिवलिंग के चारों तरफ सिर्फ एक चबूतरे का निर्माण करा दिया था। फिर 2 वर्ष पश्चात सभी गांववालों ने मिलकर यहां पर एक मंदिर का निर्माण करा दिया। मंदिर के गर्भग्रह में स्थापित प्राचीन शिवलिंग लगभग 2 फीट ऊंचा है जो की गेरुआ रंग का है।

इस मंदिर में अलग से जल निकासी की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। यहां शिवलिंग पर चढ़ाया गया जल पास में ही स्थित पीपल के वृक्ष की जड़ों में चला जाता है।

कल की दृष्टि से देखे तो यह मंदिर बहुत ही सादा बना हुआ है। गर्भग्रह की दीवारें बिल्कुल सादी है जिन पर कोई अलंकरण नहीं किया गया है। मंदिर का शिखर चतुष्कोणीय है तथा शिखर के ऊपर आमलक का अभाव दिखाई देता है किंतु कलश को स्थापित किया गया है। जिसके ऊपर ध्वज है। मंदिर के प्रांगण में एक बहुत बड़ी धर्मशाला बनी हुई है जिसमें कांवड़ यात्री तथा अन्य लोग आकर ठहरते है। मंदिर के पास एक प्राचीन कुआं भी स्थित है लेकिन वर्तमान में इसको बंद कर दिया गया है।

**5. सिद्धपीठ महादेव सबली मंदिर** – यह मंदिर हापुड़ तहसील के सबली गांव में स्थित है। मंदिर लगभग 750 वर्ष प्राचीन है। मंदिर का शिवलिंग खेत में खुदाई करते समय प्रकाश में आया था तथा इसी समय शिवलिंग के चारों तरफ एक छोटे से मंदिर का निर्माण कर दिया गया था जो की लखोरी ईटों का बना हुआ है तथा इसकी दीवारें भी लगभग 7 से 8 इंच चौड़ी है। जिस खेत में यह शिवलिंग निकला था उस खेत की लगभग तीन बीघा भूमि मंदिर के लिए दान में दे दी गई थी।

वर्तमान की बात करें तो यह मंदिर काफी भव्य तरीके से बन चुका है तथा साथ ही अन्य देवी देवताओं के दरबार भी मंदिर परिसर में बनाए गए हैं। मंदिर में ही एक बड़ी धर्मशाला का निर्माण भी कराया गया है। मंदिर में मुख्य गर्भग्रह तक जाने के लिए तीन प्रवेश द्वार बने हुए हैं जो कि मेहराब की तरह दिखाई देते हैं। मंदिर के शिवलिंग की बात करें तो शिवलिंग में ही शिव के मुख की आकृति संलग्न है जिसमें शिव को ज्ञान की अवस्था में तथा जूड़ा धारण किए हुए दिखाया गया है।

मंदिर के मुख्य गर्भग्रह का शिखर चतुष्कोणीय न होकर प्याजाकार या गुंबद की तरह है जो कि मुगल कला की विशेषता थी अर्थात कहा जा सकता है कि इसके शिवालय का निर्माण मुगलों के समय में हुआ होगा। इसमें गुंबद के ऊपर उल्टे आकार का कमल बना हुआ है जिसकी पंक्तियां नीचे की ओर फैली हुई है एवं कमल के ऊपर पीतल के कलश की स्थापना की गई है।

सावन के महीने में मंदिर में लाखों भक्त यहां दर्शन करने के लिए आते हैं तथा साथ ही यहां पर 40 से 50 दिन का एक मेला भी सावन के माह में लगाया जाता है। मंदिर की देखरेख मंदिर समिति द्वारा की जाती है।

**6. पीपलेश्वर महादेव मंदिर –** यह मंदिर हापुड़ तहसील के गांव असरा में स्थित है। असरा गांव, पक्का बाग चौराहे से बाई तरफ लगभग 14 किलोमीटर अंदर स्थित है। गांव निवासियों के अनुसार शिवलिंग को प्रकट हुए लगभग 100 वर्ष से अधिक हो चुके हैं। मंदिर का शिवलिंग पीपल के वृक्ष में से निकला था इसीलिए इसे पिपलेश्वर महादेव मंदिर कहा जाता है। उसी समय पीपल के वृक्ष के चारों ओर एक चबूतरे का निर्माण गांव मुरादपुर निजामसर के निवासी श्री अशोक कुमार ने करा दिया था। वर्तमान में अशोक कुमार जी के द्वारा ही मंदिर का निर्माण कार्य कराया जा रहा है जिसमें शिवालय के अतिरिक्त गौशाला, रसोई घर, धर्मशाला आदि का निर्माण हो रहा है।

**7. झारखंडी महादेव मंदिर –** यह मंदिर हापुड़ तहसील के पीरनगर सूदना गांव में स्थित है। पीरनगर सूदना गांव हापुड़ तहसील से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। ग्रामवासियों के अनुसार मंदिर का शिवलिंग खेत में प्रकट हुआ था तथा इस घटना को 120 वर्ष हो चुके हैं। जिनके खेत में यह शिवलिंग निकला था उन्होंने अपना खेत मंदिर के लिए दान में दे दिया थ।ा वर्तमान में यह परिवार गांव में ही रहता है।

मंदिर के शिवलिंग की बात करें तो यह शिवलिंग पीपल के वृक्ष की जड़ में है। काफी कोशिशें करने के बाद भी शिवलिंग को निकालने के सारे प्रयास असफल रहे क्योंकि शिवलिंग की गहराई का पता नहीं लग पाया है कि शिवलिंग की उत्पत्ति कितनी गहराई से हुई है।

अन्य मंदिरों की तरह यहां पर कोई पारंपरिक रूप से मंदिर नहीं बना है। यहां के शिवलिंग के खुले में रहने के कारण ही इसका नाम झारखंडी महादेव पड़ा। यहां पर सिर्फ एक धर्मशाला बनी हुई है जिसमें यहां की देखरेख करने वाले बाबा रहते हैं।

कावड़ यात्रा एवं शिवरात्रि के अवसर पर मंदिर में दर्शन करने के लिए यहां काफी भीड़ एकत्रित रहती है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1-Www.Hapur.Nic.in

2. ई० टी० अटकिनसनः स्टेटिस्टिकल, डिस्क्रिप्टिव एंड हिस्टोरिकल अकाउंट ऑफ द नॉर्थ वेस्टर्न प्रोविंसेज ऑफ इंडिया, जील्द 3,मेरठ डिवीजन, पार्ट –11, इलाहाबाद 1876, पृष्ठ 384

3-Www.hapur.Nic.in

4. साक्षात्कार – श्री आनंद कुमार गुप्ता, पुत्र श्री मदनपाल गुप्ता, आयु – 67 वर्ष, स्थान –गोल मार्केट, हापुड़ नगर।

5. साक्षात्कार – पं० अनुपम द्विवेदी, पुत्र श्री विष्णु द्विवेदी, आयु – 39 वर्ष, स्थान – बरही चौक,हापुड़ नगर।

6. साक्षात्कार – श्री चमन पुरी, पुत्र – स्व० कलिपरी, आयु 72 वर्ष, ग्राम – छपकौली,हापुड़।

7. वही

8. साक्षात्कार – श्री अमित राणा,पुत्र श्री प्रहलाद राणा, आयु– 36 वर्ष, स्थान ग्राम – सिकंदरपुर काकौडी, हापुड़।

9. साक्षात्कार – श्री ब्रह्मदत्त शुक्ला, पुत्र श्री मनोबल शुक्ला, आयु – 73 वर्ष, वैशाली कॉलोनी हापुड़।
10. साक्षात्कार – श्री बेबी लोधी, पुत्र श्री रामचंद्र लोधी, उम्र 38 वर्ष स्थान – अयोध्यापुर, हापुड़।

11. साक्षात्कार – श्री इंदर यादव, पुत्र श्री आनंदपाल यादव सिंह, उम्र – 54 वर्ष, स्थान ग्राम – नानगांव हापुड़।

12. साक्षात्कार – श्री जितेंद्र त्यागी, पुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी, उम्र – 59 वर्ष, स्थान ग्राम – सबली हापुड़।

13. साक्षात्कार – पंडित श्री रविशंकर शुक्ला, पुत्र श्री जगदीश प्रसाद शुक्ला, उम्र – 32 वर्ष,स्थान – लखीमपुर खीरी, 17 वर्षो से सबली महादेव मंदिर में रह रहे हैं।

14. साक्षात्कार – प्रधान श्री रामरतन सिंह, पुत्र श्री तेजराम सिंह, आयु 78 वर्ष, स्थान ग्राम – मुरादपुर निजामसर ,हापुड़।

15. साक्षात्कार – श्री टिंकू मिश्रा, पुत्र श्री देवीदास मिश्रा, आयु 40 वर्ष स्थान ग्राम – असरा हापुड़।

16. साक्षात्कार – श्री काशीराम, पुत्र श्री कालूराम, उम्र 62 वर्ष, स्थान ग्राम – पीरनगर सूदना हापुड़।

17. साक्षात्कार – श्री ब्रजपाल,पुत्र श्री नौरंग सिंह, आयु 36 वर्ष, स्थान ग्राम –पीरनगर सूदना, हापुड़।

18. साक्षात्कार – श्री ओंमकार गिरी, पुत्र श्री रामगिरि महाराज, उम्र 64 वर्ष, स्थान ग्राम –सुदना गांव मंदिर आश्रम, हापुड़।